ISSN 2395-051X

स्वतंत्र भारत में उत्कृष्ट पहल : दस्युओं का आत्मसमर्पण

डॉ. अंजलि दुबे

अतिथि विद्वान-इतिहास

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

ब्रिटिश काल से चंबल घाटी की दस्यु परम्परा रही है। स्वतंत्र भारत में भी मानसिंह, रूपा, लाखन, अमृतलाल, पुतलीबाई जैसे नाम मिथक के रूप में प्रचलित हुए। सामाजिक और आर्थिक कारणों से तथा अन्याय अत्याचार अपमान से तिलमिलाकर बंदूक लेकर बीहड़ों में कूद जाने को चंबल की घाटी में बागी होना कहा जाता है। 1960 में संत विनोबा के सामने शस्त्र डालकर डाकुओं ने हृदय परिवर्तन की जो श्रृंखला आरम्भ की, वह बाद के वर्षों में भी चलती रही और 1971 में जयप्रकाश जी के समक्ष और 1983 में अर्जुनसिंह जी के सामने भी शस्त्र डालकर डाकुओं ने हृदय परिवर्तन की श्रंखला जारी रखी। दस्युओं का आत्म समर्पण स्वतंत्र भारत की एक महान उपलब्धि मानी जा सकती है।

मुख्य शब्द - आत्म समर्पण, दस्यु, डाकू, बागी

भारतीय स्वतन्त्रता विधेयक ब्रिटिश संसद में 4 जुलाई, 1947 ई. को प्रस्तुत किया गया। यह विधेयक दो सप्ताह में पास हो गया। अनुदार दल ने भी इसमें पूर्ण सहयोग प्रदान किया। इसके द्वारा 15 अगस्त, 1947 ई. को भारत से ब्रिटिश शासन की समाप्ति कर दी गयी और भारत तथा पाकिस्तान दो आधे राज्य की स्थापना की गयी, जिन्हें ब्रिटिश कॉमनवेल्थ से सम्बन्ध विच्छेद करने का अधिकार प्रदान किया गया। एटली के शब्दों में, ''अधिनियम द्वारा भारत के लिए विस्तृत संविधान की व्यवस्था नहीं की गयी थी। यह ऐसा अधिनियम था जो भारत और पाकिस्तान के प्रतिनिधियों को अपना-अपना संविधान निर्माण करने की क्षमता प्रदान करता था।''[1]

भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम, 1947 के भारतीय इतिहास में ब्रिटिश शासन के अध्याय को समाप्त कर दिया और स्वतंत्र भारत के नये अध्याय को शुरू किया। प्रधानमंत्री एटली ने लोकसभा में कहा था कि 'यह घटनाओं की लम्बी तांता की चरमा सीमा है।' लार्ड सैमूयल ने कहा था कि यह इतिहास में एक अनोखी घटना है-विना युद्ध के क्रान्ति भी सन्धि।''[2] यह घटना कई दृष्टिकोणों से भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है।

प्राचीन भारतीय परंपरा में डाकुओं और बागियों के हृदय-परिवर्तन की कई किंवदंतियां मौजूद रही हैं। वाल्मीकि से लेकर अंगुलिमाल तक के नाम सहज ही लोगों के दिमाग में आ जाते हैं। लेकिन आधुनिक भारत ने भी ऐसा ही एक पूरा दौर देखा जिसकी मिसाल दुनिया में शायद और कहीं भी दिखाई नहीं देती। पहले

विनोबा और बाद में जयप्रकाश नारायण (जेपी) के अहिंसक व्यक्तित्व और जीवन-संदेशों से प्रभावित होकर उनके सामने देश के सबसे खूंखार माने जानेवाले हथियारबंद दस्तों ने एक के बाद एक आत्मसमर्पण किया था। जेपी ने तो मुसहरी प्रखंड (बिहार) में किए गए अपने प्रयोगों से यहां तक दिखाया था कि नक्सलियों के साथ भी अहिंसक संवाद और रचनात्मक पहल संभव है। एक ऐसे समय में जब हम चारों ओर हथियारबंद समूहों की हिंसा से घिरे हुए हैं, आज आजादी के 75 वें वर्ष में श्री विनोबा भावे और श्री जयप्रकाश के पुनीत कार्यों को जानना एक उपयुक्त अवसर है।

चंबल घाटी की दस्यु परम्परा में मानसिंह, रूपा, लाखन, अमृतलाल, पुतलीबाई जैसे नाम मिथक के रूप में प्रचलित हुए। सामाजिक और आर्थिक कारणों से तथा अन्याय, अत्याचार और अपमान से तिलमिलाकर बंदूक लेकर बीहड़ों में कूद जाने को चंबल की घाटी में बागी होना कहा जाता है। 1960 में संत विनोबा के सामने शस्त्र डालकर डाकुओं ने हृदय परिवर्तन की जो श्रृंखला आरम्भ की, वह बाद के वर्षों में भी चलती रही और जयप्रकाश जी और अर्जुनसिंह जी के सामने भी शस्त्र डालकर डाकुओं ने हृदय परिवर्तन की श्रंखला जारी रखी।[3]

1960 में आधुनिक दुनिया के इतिहास में पहली बार किसी खूंखार हथियारबंद समूह ने किसी संत के सामने सार्वजनिक रूप से और स्वेच्छा से आत्मसमर्पण किया था। जब विनोबा कश्मीर की यात्रा पर थे, तब उन्हें चंबल घाटी के प्रसिद्ध डाकू मानसिंह के बेटे तहसीलदार सिंह का पत्र मिला कि उसे फांसी की सजा सुना दी गई है और फांसी पर चढ़ने से पहले वह संत विनोबा का दर्शन करना चाहता है।

विनोबा समझ गए कि तहसीलदार सिंह के मन में अवश्य कोई ऐसी बात है जो वह उन्हें ही बताना चाहते थे, किन्तु विनोबा अपनी यात्रा बीच में नहीं छोड़ सकते थे, इसलिए उन्होंने तत्काल ही अपने दूत के रूप में मेजर जनरल यदुनाथ सिंह को तहसीलदार सिंह से मिलने के लिए इलाहाबाद के पास नैनी सेंट्रल जेल में भेजा। जेल में तहसीलदार सिंह से मिलने के बाद यदुनाथ सिंह चंबल घाटी में भी गए और वहां मानसिंह दल के दूसरे बहुत से डाकुओं से भी मिले।

इलाहाबाद से लौटकर यदुनाथ सिंह ने विनोबा को डाकुओं का संदेश दिया कि कश्मीर से लौटते हुए यदि विनोबा जी चंबल घाटी भी पधारें तो कुछ डाकू उनके सामने आत्मसमर्पण कर सकते हैं। यह एक अभूतपूर्व घटना हो सकती थी। विनोबा ने यह सोचकर उस इलाके में जाना स्वीकार कर लिया कि यदि अहिंसा के जरिए ये डाकू सामान्य जीवन अपनाना स्वीकार कर लें, तो यह एक अनूठा प्रयोग होगा जिससे अन्य हथियारबंद समूहों के द्वारा भी हथियार छोड़ने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। जब यह बात मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. कैलाशनाथ काटजू तक पहुंची, तो उन्होंने इस काम के लिए विनोबा को आग्रह भरा निमंत्रण भी भेज दिया। पंजाब होते हुए जब विनोबा जी की पदयात्रा उत्तर प्रदेश में आगरा पहुंची तो केन्द्रीय गृह मंत्री गोविन्द वल्लभ पंत और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री सम्पूर्णानंद भी उनसे मिलकर इसकी कार्ययोजना बनाने पहुंचे। डाकुओं की इस समस्या से तब मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के साथ-साथ राजस्थान भी पीड़ित था।[4]

7 मई, 1960 को जब विनोबा ने चंबल के बीहड़ों में प्रवेश किया, तो पूरा देश आशा और जिज्ञासा भरी नजरों से उनकी ओर देख रहा था, क्योंकि तीनों राज्यों की पुलिस और सेना तक के संयुक्त प्रयासों के बाद भी इस समस्या का अंत नहीं किया जा सका था। चंबल के भीतर अपनी प्रार्थना सभा के बाद विनोबा जी ने कहा 'केवल ईश्वर ही जानता है कि डाकू कौन है ? कुछ आदमी डाकू के नाम से बदनाम हैं, लेकिन अकेले वे ही डाकू हैं, यह बात सही नहीं है। भगवान की नजर में कुछ दूसरे आदमी इन बदनाम डाकुओं से भी अधिक जुर्म करने के अपराधी हो सकते हैं। कुछ लोग आशा करते हैं कि मैं डाकुओं की समस्या हल करने जा रहा हूं पर बात बिल्कुल दूसरी है। इन समस्याओं को हल करनेवाला मैं कौन होता हूं ? मैं तो भगवान का तुच्छ सेवक हूं जो भले आदमियों की सेवा के लिए गांव-गांव घूम रहा है। मैं तो बुद्ध और यीशू के चरण-चिह्नों पर चलने की कोशिश कर रहा हूँ। मेरी तो केवल एक इच्छा है कि आज करुणा की जो नदी सूखी पड़ी है, वह फिर से बहने लगे।'' विनोबा जी ने सरकार से भी अपील की कि इस समस्या को प्रेम से सुलझाने का प्रयत्न करें। हिंसा से तो यह गत 15 वर्षों में सुधरी नहीं है। पुलिस जितने डाकुओं को मारती या पकड़ती है, उतने ही फिर नये पैदा हो जाते है। अतः केवल अहिंसा एवं क्षमा के द्वारा ही दस्यु समस्या का निवारण हो सकता है।

8 जून तक एक महीने का समय विनोबा जी ने इस कार्य में लगाया। परिणामस्वरूप लुक्का, लच्छी, भगवानसिंह, तेजसिंह और कन्हई जैसे 20 प्रसिद्ध डाकुओं ने जिनको मारने या पकड़वाने के लिए सरकार ने बड़े बड़े इनाम घोषित कर रखे थे, उन्होंने विनोबा जी के आगे अपने हथियार लाकर रख दिये और प्रतिज्ञा की कि भविष्य में ऐसा काम नहीं करेंगे।[5]

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की पीढ़ी के संघर्ष की आंच में तपकर निखरे व्यक्तित्व जब एक के बाद एक इहलोक में प्रस्थान करने लगे। तब देश में सर्वमान्य व्यक्त्वि वाले इने-गिने लोग ही रह गए थे। बाबू जयप्रकाश नारायण उनमें से एक थे, जिनके प्रति सबके मन में आदर और विश्वास का भाव था। उनके पटना निवास पर एक अक्टूबर 1971 को लंबे डील-डौल का एक व्यक्ति अपने आपको रामसिंह, चंबल घाटी के जंगल का ठेकेदार बताते हुए पंहुचा और डाकुओं की ओर से उनके समक्ष आत्मसमर्पण करने का प्रस्ताव रखा। इससे उस इलाके में डाकू समस्या का पूरी तरह अंत हो जाएगा। जयप्रकाशजी ने संदेशवाहक को संत विनोबा के पास जाने की सलाह दी। जवाब मिला कि विनोबाजी ने ही उनसे मिलने गए डाकुओं के प्रतिनिधि को जयप्रकाशजी के पास जाने का परामर्श दिया है।

अतः रामसिंह दोवारा जेपी से मिले और उन्हें मनाने की कोशिश की। तभी अचानक एक अजीब सी घटना घटी जिससे जे पी चौंक से गए। अभी तक रामसिंह का रूप धरे उस व्यक्ति ने अकस्मात् जेपी से कहा, 'बाबूजी मैं ही माधोसिंह हूँ'। जिस तरह से माधोसिंह ने अपना असली रूप प्रकट किया उससे जे पी जैसे व्यक्तित्व भी स्तब्ध रह गए। उन्होंने सिर्फ इतना पूछा, 'आप पर डेढ़ लाख रुपये का इनाम है, ऐसे में आपने मेरे पास आने का जोखिम कैसे उठाया ? तब वे यह जानकर कि आत्म सामर्पण का प्रस्ताव गंभीरतापूर्वक आया है, पहल करने के लिए सहमत हो गए। उन्होंने माधोसिंह से कहा भी कि ''तुम्हारे सिर पर डेढ़ लाख का इनाम है,

इसलिए तुम्हें ऐसा खतरा नहीं उठाना चाहिए था।'' माधोसिंह का जवाब था, ''बाबूजी आपके पास मैं इसलिए आया हूं कि हम लोगों को आप पर पूरा विश्वास है।'' माधोसिंह ने तत्काल वहीं जयप्रकाशजी के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। चंबल के डाकू अपने आपको बागी कहते हैं। माधोसिंह ने बागियों की ओर से यह अपेक्षा रखी -

(1) आत्मसमर्पण करने वाले बागियों को सजा चाहे जितनी लम्बी दी जाए, परंतु फांसी किसी को न हो।

(2) मुकदमे एक ही जगह चलाए जाएं।

(3) अदालत अधिक से अधिक तीन साल में सभी मुकदमे निपटा दें।

(4) जेल में हमारे साथ अच्छा बर्ताव किया जाए। हथकड़ी न लगाई जाए।

(5) जब तक हम लोग जेल में रहें। हमारे बाल-बच्चों को सम्भाला जाए।

बागियों की ये अपेक्षाएं जयप्रकाशजी को उचित लगीं। उन्होंने माधोसिंह को अपने सोखोदेवरा आश्रम में रखने की व्यवस्था की। केन्द्रीय गृहमंत्री तथा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व राजस्थान के मुख्यमंत्रियों से पत्र व्यवहार किया। खुलकर बातचीत की। इस तरह हृदय परिवर्तन के एक क्रांतिकारी अनुष्ठान की भूमिका तैयार हो गई।[6]

11 अप्रैल 1972 को बाबू जयप्रकाश नारायण चंबल घाटी पहुंचे, वहां दो लाख के इनामी दस्यु सरदार मोहरसिंह ने उनके सामने पहला आत्मसमर्पण किया। 14 अप्रैल को 82 तथा 16 अप्रैल को 81, कुल 164 डाकुओं ने जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में महात्मा गांधी के चित्र के समक्ष देशी-विदेशी हथियार डालते हुए आत्मसमर्पण कर दिया। हर एक बागी को रामयण और गीता प्रवचन की एक-एक प्रति भेंट की गई। जयप्रकाशजी ने उन्हें समझाइश दी - ''आप सबसे मेरा यही निवेदन है कि जो मार्ग आज आपने अपनाया है, अब उसे कभी मत छोड़िए। जेल जीवन को अपने नैतिक और आंतरिक विकास का अवसर मानिए और जेल से छूटने के बाद समाज के अच्छे सेवक बनकर रहिए।''

1 जून 1972 को हृदय परिवर्तन की श्रृंखला में दस्यु मलखान सिंह ने अपने 18 साथियों के साथ ग्वालियर में बाबू जयप्रकाश नारायण और मुख्यमंत्री प्रकाशचंद सेठी के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद चंबल घाटी के सूचीबद्ध दस्यु गिरोहों में से केवल सोबरन सिंह का गिरोह बाकी रहा। सेठी ने डाकुओं के आत्मसमर्पण की महती घटना का श्रेय ''राज्य सरकार के दृढ़ निश्चय और बाबू जयप्रकाश नारायण के महान नेतृत्व में सर्वोदय कार्यकर्ताओं के प्रेरक प्रयत्नों'' को दिया।

12 फरवरी 1983 को दस्यु फूलन देवी और दस्यु घनश्याम उर्फ घंसा ने अपने-अपने गिरोहों के साथ भिण्ड में मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। उन्होंने महात्मा गांधी के चित्रों के सामने हथियार डाले। इसी वर्ष चंबल के दस्यु सरदार मलखान सिंह ने भी अर्जुन सिंह जी के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया।' इस प्रकार भारतीय इतिहास में पहली बार दस्युओं द्वारा आत्म समर्पण स्वतंत्र भारत की एक महान उपलब्धि मानी जा सकती है, जिसे इतिहास में सदा याद रखा जायेगा।

ISSN 2395-051X

सन्दर्भ

1. Attlee : "The Act did not lay down a new constitution for India providing for every detail. It was far more, in the nature of an enabling bill a bill to enable the representative of India and Pakistan to draft their own constitution."
2. Lord Samuel : "It was an orent uniaue in history a treaty of peace without war."
3. MP Police Record File, Gwalior Division, Police Head Quarter, Bhopal, 1960
4. संत विनोबा भावे, www.vicharkrantibooks.org, page 7
5. बाबा विनोबा, http://literature.awap.org, page 8
7. श्रीधर विजयदत्त : शह और मात, मध्यप्रदेश की राजनीति की कहानी, कर्मवीर प्रकाशन, 10, पत्रकार नगर, माधवराव सप्रे मार्ग, भोपाल, 2004, पृष्ठ क्रमांक, 52